श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

मास्टर ऑफ जैनिज्म् द्वितीय वर्ष-१

प्रथम सत्र
जून - २०२४
गुणांक - ५०

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा। २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें। ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे। ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है। ५. गलत एनरोलमेन्ट नंबर तथा नहीं समझे ऐसे एनरोलमेन्ट नंबर के १० अंक कम कर लिये जायेंगे। ६. समय पर ता. २५ ओक्टोबर तक पेपर नही मिले तो दूसरे १० अंक कम किये जायेंगे। ७. निबंध के मार्क्स ग्रेड पद्धति से दिये जायेंगे। ८. जवाब पत्र, निबंध में नाम, एनरोलमेन्ट नंबर, वर्ष और सत्र लिखना जरुरी है। ९. जवाब तत्वार्थ सूत्र के ६ व ७ अध्याय मेंसे ही लिखना (पृष्ठ १४८ से १९१ तक)।

प्रश्न नं. १ योग्य विकल्प ढूंढकर रिक्त स्थान की पूर्ति करो २५

१. हिंसा आदि कार्यो के लिये साधन जुटाना ..... है।
२. मैत्री का विषय..... है।
३. शरीर आदि द्वारा जाने आने आदि में कषाययुक्त प्रवृति ..... कहलाती है।
४. जाग्रत और कुशाग्रबुद्धि का झुकाव..... की ओर ही होगा।
५. जिसके पालन और अनुसरण से सद्गुणों की वृद्धि हो वह ..... है।
६. ज्ञान, प्रदोष आदि आस्त्रवों के सेवन के समय..... का बंध मुख्य रुप से होता है।
७. निरवद्य सत्य भाषण..... आदि भाषण शुभ वाग्योग हैं।
८. मालिक से मांगते समय ही अवग्रह का परिमाण निश्चित कर लेना..... है।
९. जो सत्य होने पर भी दूसरे को पीडा पहुँचाता हो ऐसा ..... कथन असत् है।
१०. ..... की शुद्धि पर ही चारित्रशुद्धि अवलम्बित है।
११. शक्ति छिपाये बिना विवेक पूर्वक हर तरह की सहनशीलतास का अभ्यास..... नामकर्म के बन्धहेतु हैं।
१२. ..... से युक्त अगारी है।
१३. सच्चे त्यागी या तपस्वी को कठोर व्रत नियमों का पालन करने पर भी ..... का बंध नहीं होता।
१४. छुरी आदि निर्जिव वस्तु की ..... शक्ति आदि भावाधिकरण है।
१५. स्वभावतः ..... का होना मनुष्य आयु के बंध के कारण है।
१६. योग से आकृष्ट जो कर्म कषायोदय न होने से आत्मा के साथ लगकर तुरन्त छूट जाता है वह ..... कहलाता है।
१७. अपमान से मन के ..... होने से तीव्र संताप होना ताप कहलाता है।
१८. अन्य व्रतों की अपेक्षा ..... प्रधान है।
१९. अणुव्रत त्याग के प्रथम स्तंभ होने से ..... कहलाते है।
२०. देश काल आदि की परिस्थिति तथा मानव बुद्धि की संस्कारिता के अनुसार ..... बनता है।
२१. दान लेने वाले पात्र की विशेषता यह कि..... के लिये जागरुक रहना।
२२. हिंसा आदि दोषों से ..... की जो सम्भावना होती है उसका ध्यान रखना पारलौकिक दोष दर्शन है।
२३. वीर्य भी ..... की विचित्रता का कारण होता है।
२४. ईर्यापथिकी क्रिया ..... के आश्रव का कारण नहीं है।
२५. नीच लोगों की संगति करना..... कर्म के बन्ध का कारण है।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो २५

१. यह वस्तु मेरी है और मैं इसका स्वामी हुं, ऐसा संकल्प किस कर्म बंध का हेतु है ?
२. जगत के स्वभाव और शरीर के स्वरुप का चिंतन किसके लिये करना चाहिये ?
३. समस्त सद्गुणों का मूल क्या है ?
४. इर्यापथ कर्म की स्थिति कितनी मानी गई है ?
५. व्रती बनने के लिये किसका त्याग आवश्यक माना गया हैं ?
६. पराधीनता के कारण या अनुसरण के लिये अहितकर प्रवृति का त्याग करना यह क्या है ?
७. इच्छा पूर्वक प्रवृति करना यह क्या है ?

८. सोचना कुछ, बोलना कुछ और करना कुछ का अर्थ क्या है ?
९. शुभध्यान की कोटि का होने से किसे त्याग धर्म में स्थान प्राप्त है ?
१०. असमीक्ष्य अधिकरण कौनसे व्रत का अतिचार है?
११. किस स्थिति में संलेखना व्रत विधेय माना गया है ?
१२. अच्छी तरह देखे बिना ही किसी वस्तु को कहीं रख देना क्या है ?
१३. तीन प्रकार के योग समान होने पर भी कषाय न हो तो उपार्जित कर्म में किसका बंध नहीं होता ?
१४. ज्ञान के होने पर भी उसके गुणों को न दर्शाना क्या है ?
१५. पहले से दसवें गुणस्थानक तक के सभी जीव न्यूनाधिक प्रमाण में कैसे होते हैं ?
१६. संतोष किसका मूल है ?
१७. सत्कार्य में प्रवृत होने से पहले किससे निवृत हो जाना है ?
१८. प्राणनाश करने की और धर्म मानने की कमलपूजा जलसमाधी आदि प्रथायें किनमें प्रचलित थी और हैं ?
१९. तर्कवाद से परे के पदार्थो को तर्कदृष्टि से कसने का प्रयत्न क्या कहलाता है ?
२०. दूसरे के दान गुण की ईर्ष्या से दान देने के लिये तत्पर होना क्या कहलाता है ?
२१. जैन उपासना का ध्येय उसके तत्वज्ञान के अनुसार क्या है ?
२२. जगतस्वभाव एवं शरीरस्वभाव के चिंतन से किसका बीजवपन होता है ?
२३. धूर्तता और आलस्य से शास्त्रोक्त विधि का अनादर करना क्या है ?
२४. वीर्यान्तराय के क्षयोपशम या क्षय से तथा पुद्गलों के आलम्बन से होते आत्मप्रदेशों के परिस्पन्द को क्या कहते हैं ?
२५. संसारी जीव शुभ या अशुभ प्रवृति करते समय कितनी अवस्थाओं में से किसी न किसी अवस्था में अवश्य रहता है ?

प्रश्न नं. ३ विविध ग्रंथो की सहायता से तुम्हारे शब्दों में १० से १५ पन्नो का महानिबंध लिखो (कोई भी एक)

१. अहिंसा परमोधर्म (हिंसा की व्याख्या, स्वरुप, हिंसकवृति, हिंसा से निवृति, अहिंसा की प्रधानता, रात्रिभोजन त्याग, अहिंसा से लाभ आदि)
२. व्रत और व्रती (व्रत की व्याख्या, व्रत के भेद, भावनायें, त्याग धर्म, योग्यता, अतिचार, जीवन में व्रत की आवश्यकता क्यों ?)
३. दानधर्म (दान की व्याख्या, दान के प्रकार, भूषण, दूषण, ममत्व का त्याग, दान से प्राप्त इहलौकिक परलौकिक सुख इं)

एम.जे. पार्ट -१ केन्द्रिय परिक्षा पत्र कैसा होगा ?

प्रश्न -१	रिक्त स्थान भरो	गुणांक - २०
प्रश्न -२	एक शब्द मे जवाब लिखो	गुणांक - २०
प्रश्न -३	नीचे के वाक्य सही या गलत बताईये	गुणांक - २०
प्रश्न -४	जोडियाँ लगाओ	गुणांक - २०
प्रश्न -५	एक वाक्य में व्याख्या लिखो	गुणांक - २०
	कुल	गुणांक - १००

निबंध के लिये नीचे मुजब ग्रेडिंग रहेगी

१) ४० मार्क्स के उपर A+ २) ३५ मार्क्स के उपर A ३) ३० मार्क्स के उपर B+ ४) २५ मार्क्स के उपर B
५) २० मार्क्स से कम C

उत्तर पत्र लिखे पते पर भेजिए : सौ. काश्मीरा विनोद लोडाया
शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबद (महा.) ४३१ ००१
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com